Dr. RAMENDRA KUMAR SINGH-2
Dr. ASSISTANT PROFESSOR,
P.G. DEPT. OF PSYCHOLOGY
(MAHARAJA COLLEGE, ARA)

U.G. SEMESTER-IV (MJC-5) ABNORMAL PSYCHOLOGY

TOPIC - CRITERIA OF ABNORMALITY

असामान्य मनोविज्ञान मनोविज्ञान की ऐसी शाखा है, जिसमें व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों एवं असामान्य मानसिक प्रक्रियाओं के कारण, स्वरूप, उपचार तथा निवारण (Prevention) या रोकथाम का अध्ययन किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार उन असामान्यताओं की वैज्ञानिक व्याख्या के लिए सिद्धान्तों का भी निर्माण किया जाता है। इसके विषय वस्तु के अन्तर्गत मूलतः कुसमायोजित व्यवहारों, विघटित व्यक्तित्व, मानसिक उपद्रव, आदि का अध्ययन किया जाता है तथा इनके उपचार के तरीकों पर विचार किया जाता है। संक्षेप में संक्षेपतः हम कह सकते हैं कि असामान्य मनोविज्ञान "असामान्य व्यक्तियों के व्यवहारों एवं मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।"

व्यक्तियों की इन असामान्य व्यवहारों और मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई कसौटियों अथवा मॉडल या दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये हैं। यहाँ हम कुछ प्रमुख कसौटियों पर चर्चा करेंगे।

सामान्यता और असामान्यता एक सापेक्ष सम्प्रत्यय है (Relative Concept) है। यही कारण है ऐसी परिस्थिति में मनोवैज्ञानिकों द्वारा सामान्यता एवं असामान्यता के स्वरूप को निर्धारित करने के लिए कई तरह के मापदण्डों अथवा - दृष्टिकोणों का प्रतिपादन किया गया जिन्हें असामान्यता मापन की कसौटियाँ भी कहा जाता है। ऐसे दृष्टिकोण अथवा विचारधाराएँ कुछ पूर्वकल्पनाओं पर आधारित होती हैं जिन्हें उपयुक्त कसौटियों

के माध्यम से समझने का प्रयास किया जाता है। किश्कर (Kisker) (1985) ने उन तमाम कसौटियों अथवा मापदंडों को दो प्रमुख भागों में बाँटा है:-

(क) वर्णात्मक मापदण्ड (DISCRIPTIVE MODEL or, CRITERIA)

(ख) व्याख्यात्मक मापदण्ड (EXPLANATORY MODEL or, CRITERIA)

(क) वर्णात्मक मॉडल :-

इसे सैद्धान्तिक मॉडल अथवा मापदण्ड भी कहा जाता है। इस मॉडल के अन्तर्गत वैसे दृष्टिकोणों अथवा विचारधाराओं को रखा गया है जो असामान्य व्यवहार की व्याख्या कुछ कसौटियों (criteria) के आधार पर करते हैं कि कौन से व्यवहार असामान्य कहे जायेंगे? अथवा किस तरह के व्यवहार असामान्यता की श्रेणी में आयेंगे? इस मॉडल के तहत आने वाले criteria अथवा view points में असामान्यता के कारणों की जानकारी नहीं मिल पाती है। किश्कर (Kisker) ने वर्णात्मक मॉडल या, मापदंड में पाँच तरह के दृष्टिकोणों को रखा है:-

(iv) नैतिक कसौटी (Moral ~~char~~ criteria) :- यह कसौटी नैतिक मूल्यों पर आधारित है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के व्यवहारों को Ethical Standared रखकर व्याख्या किया जाता है। यदि नैतिक मापदण्ड पर किसी व्यक्ति का व्यवहार खरा (Perfect) नहीं उतरता है तो उसे असामान्य व्यवहार कहा जाता है:- "A person who acts accordance with his Ethics, religion and culture is normal, while he, who deviates is abnormal."

Teacher's Signature : ....

इस मॉडल की समालोचनात्मक व्याख्या करने पर पाते हैं कि यह दोषपूर्ण है क्योंकि नैतिकता एक सापेक्ष सम्प्रत्यय है। एक समाज में जो व्यवहार नैतिक माने जाते हैं वही व्यवहार दूसरे समाज एवं संस्कृति में अनैतिक व्यवहार की श्रेणी में आ जाते हैं। जैसे मुस्लिम समाज में चचेरी भाई एवं बहन में शादी मान्य है, नैतिक है, जबकि हिन्दू समाज में इसे अनैतिक माना जाता है और ऐसी शादियाँ अमान्य मानी जाती है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि असामान्यता की नैतिक मॉडल अथवा कसौटी सीमित और एकांगी है।

② सामाजिक मापदंड :- असामान्यता के इस मॉडल का आधार, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानक (Socio-Cultural norms) के अनुकूलता और प्रतिकूलता है। व्यक्ति का व्यवहार जब सामाजिक-सांस्कृतिक मानक (Socio-Cultural norms) के अनुकूल होते हैं तो उसे सामान्य व्यवहार कहा जाता है। सामाजिक सांस्कृतिक मापदंड से तात्पर्य व्यक्ति के वैसे व्यवहार से है जहाँ की एक खास समाज तथा संस्कृति के अधिकांश लोगों द्वारा स्वीकृत होता है और पालन किया जाता है। जैसे हमारे देश में Homosexuality अमान्य है लेकिन Heterosexuality मान्य है। एक व्यस्क पुरुष एवं एक व्यस्क स्त्री के बीच सामाजिक मान्यता प्राप्त विधि से बनाये गये शारीरिक संबंध (Physical relation) अथवा Sexuality मान्य है। यह सामान्य व्यवहार है जबकि Homosexuality एक असामान्य व्यवहार है। स्पष्ट हो जाता है कि इस मॉडल में समाज के अधिकांश (अधिसंख्य) लोगों द्वारा अनुमोदित व्यवहार सामान्य व्यवहार है। सामाजिक अनुमोदन नहीं मिलने पर वह व्यवहार असामान्य हो जायेगा।

नहीं है। इसमें भी वह विचारधारा अथवा मॉडल भी दोषपूर्ण जो नैतिक दृष्टिकोण में विद्यमान है। प्रत्येक समाज एवं संस्कृति की मान्यताएँ अलग-अलग होती हैं। ऐसी स्थिति में समाज एवं संस्कृति बदलने पर Abnormality का मापदंड भी बदल जाता है। दूसरा दोष यह भी लगाया जाता है एक ही समाज में एक समय में एक व्यवहार अनैतिक, असामान्य और अमान्य होती है अथवा मानी जाती है लेकिन कालान्तर में वही समाज उसी व्यवहार को मान्यता प्रदान कर देता है। यानी समय के साथ Social Norms बदल जाते हैं। अतः यह दृष्टिकोण भी असामान्यता की सही-सही व्याख्या करने में सफल नहीं है।

(B) (3) सांख्यिकीय दृष्टिकोण :- असामान्यता की व्याख्या करने के लिये एक नये मॉडल मनोवैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है जिसे Statistical Model अथवा Viewpoint कहा जाता है। यह मॉडल उपरोक्त दोनों Criteria से अधिक वैज्ञानिक है। इस विचारधारा के मानने वाले मनोवैज्ञानिकों ने असामान्य व्यवहारों की व्याख्या सांख्यिकीय कसौटी पर करने का प्रयास किये हैं। इसके अनुसार औसत से ऊपर और औसत से नीचे प्रसार रेंज में आनेवाले व्यवहार असामान्य होते हैं। इस कसौटी के आधार पर मानसिक मंदता तथा असामान्यता दोनों की व्याख्या I.Q. माप के आधार पर करने का प्रयास किया है। इस मॉडल के अनुसार जिन लोगों की I.Q. 70 से नीचे होती है वैसे लोग असामान्यता से ग्रस्त होते हैं और Abnormal व्यवहार करते हैं। इसी तरह जिनकी I.Q. 140 से ऊपर होती है वे भी असामान्य होते हैं और असामान्य

व्यवहार करते हैं। यानी वे सभी व्यवहार जो औसत से विलग्नित होते हैं असामान्य कहे जाते हैं और जो लोगों के व्यवहार औसत के अन्दर होते हैं या आते हैं सामान्य कहे जाते हैं।" इसे स्पष्ट करने के लिए Normal Probability curve द्वारा दर्शाया जा सकता है।

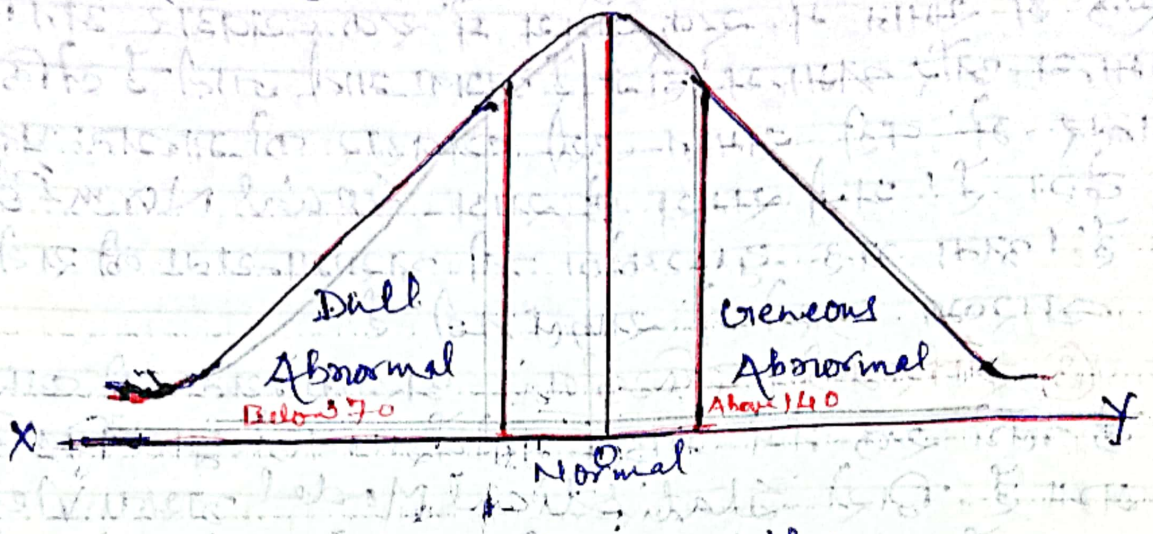

इस विधि की प्रथम विशेषता यह है कि सामान्यता और असामान्यता के बीच के सापेक्ष अंतर को स्पष्ट कर देती है। यह भी स्पष्ट करने में सक्षम है कि सामान्य और असामान्य में मात्रात्मक अंतर है। ब्राउन (1960) के शब्दों में - "Thus abnormal phenomena differ from the normal in degree not in kind."

इस मॉडल का समालोचनात्मक ढंग से अध्ययन करते पर पाते हैं कि यह भी दोषरहित नहीं है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के विशेषताओं एवं गुणों के माप पर आधारित है। लेकिन व्यक्ति के कुछ ऐसे भी गुण होते हैं जिन्हें मापने के लिये कोई मापनी है ही नहीं है। दूसरी कमजोरी अथवा सीमा यह है कि

Expt. No. ....   Date : ....

इसके अनुसार किसी भी गुण का कम या, अधिक होना असामान्यता का सूचक माना जाता है, जो कि सही नहीं है। यह इस विचारधारा की एक बहुत बड़ी दोष है। यहाँ यह भी ध्यान रखना होगा कि सामान्यता और असामान्यता के बीच सीमा रेखा खींचना बहुत ही कठिन और मुश्किल कार्य है। हम यह कैसे कह सकते हैं कि असामान्यता यहाँ से प्रारम्भ होती है और यहाँ से सामान्यता की गणना की जाती है या की जाए। औसत से कितना विचलन (Deviation) को असामान्य कहा जायेगा। यह भी निर्धारित करना कठिन है। इसके अलावे भी यह देखने को मिलता है कि औसत से कम बुद्धिवाले भी अच्छी तरह अभियोजित हो जाते हैं जबकि औसत वाले अभियोजित न होकर Mental disorder के शिकार हो जाते हैं।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि दूसरे कसौटियों के तुलना में Statistical viewpoints अथवा criteria कुछ अधिक वैज्ञानिक अवश्य है, पर दोषरहित नहीं है। Kisker (1985) के अनुसार —

"Statistical model cannot reflect the suitable complexities of maladaptive behavior"

④ आदर्शवादी कसौटी (Normative criteria)

यह भी सामान्यता और असामान्यता को निर्धारित करने वाली कसौटी है, जो इसका निर्धारण आदर्श

Teacher's Signature : ....

व्यवहार के आधार पर करती है। इस मापदंड में व्यक्तिविशेष के विचारों एवं व्यवहारों को Ideal behaviour से तुलना करके जाना किया जाता है, यदि किसी व्यक्ति का व्यवहार स्थापित आदर्श के विपरीत होता है तो वह व्यक्ति असामान्यता का शिकार माना जायेगा। यह दृष्टिकोण अथवा कसौटी भी दोषपूर्ण है। वस्तुतः Moral Model वाली सारी दोषें इस कसौटी पर भी लागू होती है। एक समाज एवं धर्म के दृष्टिकोण जो व्यवहार आदर्शपरक है, दूसरे समाज एवं धर्म के लिए भी आदर्शपरक हो, यह जरूरी नहीं है।

⑤ दैहिक दृष्टिकोण :- असामान्यता निर्धारण की यह कसौटी का आधार दैहिक बनावट है। इस दृष्टिकोण के समर्थक मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जिन लोगों की शारीरिक बनावट यानी लम्बाई चौड़ाई अधिक होती है तथा वैसे लोगों की ब जो औसत से अधिक नाटा होते हैं वैसे लोग Abnormal व्यवहार वाले होते हैं। इसी प्रकार बहरे गूंगे व्यक्तियों में तथा अँधे यानी Disable व्यक्ति भी असामान्य व्यवहार वाले होते हैं।

यह दृष्टिकोण अथवा कसौटी भी दोषपूर्ण है। बहुत बार यह देखा गया है कि औसत शारीरिक बनावट (Average Physique) वाले व्यक्ति अपने वातावरण में नये अभियोजन प्राप्त कर पाते हैं, जबकि अधिक लम्बाई चौड़ाई वाले व्यक्ति अथवा छोटा शरीर वाला व्यक्ति विकलांग/दिव्यांग व्यक्ति अच्छी तरह अभियोजित हो जाता है और शांति एवं समृद्धि तथा खुशहाल जीवन जीता है। अपना रचनात्मक कार्य करके अपना नाम रोशन करता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वर्णात्मक

Expt. No. .... Page No. 08

मापदंड के तहत आनेवाले असामान्यता की व्याख्या की निमित उपर्युक्त पाँचों कसौटियों में कोई भी कसौटी पूर्णतः मान्य नहीं है, बल्कि दोषयुक्त है और असामान्यता की आंशिक व्याख्या ही कर पाती है। इनमें statistical viewpoint कुछ हदतक वैज्ञानिक व्याख्या कर पाती है। अतः असामान्यता की व्याख्या के लिये इस दृष्टिकोण के साथ-ही साथ आवश्यकतानुसार अन्य कसौटियों का भी इसके साथ उपयोग करके ही किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना उचित प्रतीत होता है।

Teacher's Signature : ....